# "स्त्री चेतना और आदिवासी अस्मिता के आलोक में निर्मला पुतुल की कविताएँ: एक मूल्यांकन"

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिंदी विभाग में पीएच.डी. उपाधि हेतू प्रस्तुत शोध प्रारूप


शोधनिर्देशिका

डॉ मीरा कुमारी
सहायक प्राध्यापक
के.बी.सी.बेड़ो, महाविद्यालय,
राँची.

शोधार्थी

परविन कुमार दास
सहायक प्राध्यापक
के.बी.सी.बेड़ो, महाविद्यालय,
राँची.

**"स्त्री चेतना और आदिवासी अस्मिता के आलोक में निर्मला पुतुल की कविताएँ: एक मूल्यांकन"**

## 1. शोध विषय का परिचय:-

निर्मला पुतुल भारतीय आदिवासी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका हैं। उनका जन्म झारखंड के दुमका जिले में हुआ था और वे संथाली समुदाय से ताल्लुक रखती हैं। निर्मला पुतुल मुख्यतः अपनी कविताओं और लेखन के माध्यम से आदिवासी समाज की समस्याओं, उनके संघर्षों, और उनकी सांस्कृतिक पहचान को आवाज देती हैं। उनके लेखन में आदिवासी समाज के दर्द, उनकी परंपराओं, और उनके साथ होने वाले शोषण का सजीव चित्रण मिलता है।

उनकी कविता में संवेदना, साहस और प्रतिरोध की आवाज होती है। निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी जीवन की असलियत, उनकी आर्थिक समस्याएं, और उनकी सांस्कृतिक धरोहर के पहलुओं को बेहद सटीक ढंग से उकेरा गया है। उनके कविता संग्रह "नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द" और "इस तिरिया जनम को" काफी प्रसिद्ध हैं।

निर्मला पुतुल का साहित्य समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज़ है और उनके लेखन ने आदिवासी समाज के संघर्ष को मुख्यधारा के सामने रखा है, जो हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में एक अनोखा और महत्वपूर्ण योगदान है।

निर्मला पुतुल के साहित्य में**आदिवासी अस्मिता**की एक सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। वे आदिवासी समुदाय की एक महत्वपूर्ण आवाज हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं में आदिवासियों के संघर्ष, उनके सांस्कृतिक मूल्य, उनकी परंपराओं, और उनकी अस्मिता को मुख्यधारा में लाने का कार्य किया है। उनके लेखन में आदिवासी जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और उनकी पहचान की सुरक्षा के प्रति गहरी संवेदनशीलता है। निर्मला पुतुल का साहित्य आदिवासी अस्मिता को केवल एक सांस्कृतिक पहचान नहीं, बल्कि उनके सम्मान, आत्मसम्मान, और अस्तित्व की रक्षा के रूप में दिखलाई देता है।इस शोध प्रस्ताव के जरिए निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी अस्मिता को निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया जाएगा:

1. **संस्कृति और परंपराओं का सम्मान**: निर्मला पुतुल अपनी कविताओं में आदिवासी संस्कृति और परंपराओं को विशेष महत्व देती हैं। उनकी रचनाओं में इन परंपराओं को आदिवासियों की पहचान और अस्मिता का आधार बताया गया है। वे आदिवासी समाज की संस्कृति को बाहरी प्रभावों से बचाए रखने की आवश्यकता पर जोर देती हैं, क्योंकि इन परंपराओं के क्षरण से उनकी अस्मिता को खतरा है।
2. **प्राकृतिक संसाधनों और भूमि का अधिकार**: आदिवासी अस्मिता के लिए भूमि और जंगल का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी समाज की प्राकृतिक संसाधनों के प्रति गहरी निष्ठा और इनके संरक्षण की भावना को प्रमुखता से दर्शाया गया है। उनके लेखन में बार-बार इस बात का उल्लेख होता है कि बाहरी शक्तियां आदिवासियों को उनके संसाधनों से वंचित कर रही हैं, जिससे उनकी अस्मिता खतरे में है।
3. **आदिवासी समाज का संघर्ष और शोषण का प्रतिरोध**: उनकी कविताएं आदिवासी समाज के ऐतिहासिक संघर्षों और वर्तमान में उनके खिलाफ होने वाले शोषण को भी आवाज देती हैं। पुतुल का साहित्य पितृसत्तात्मक व्यवस्था और शोषणकारी समाज के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक है। वे अपनी कविताओं में आदिवासियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के प्रति जागरूकता लाती हैं और आदिवासियों के साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती हैं।
4. **आदिवासी स्त्री का संघर्ष**: निर्मला पुतुल के लेखन में आदिवासी महिलाओं की अस्मिता का विशेष उल्लेख होता है। उनकी कविताएं आदिवासी महिलाओं के दोहरे संघर्ष को सामने लाती हैं—एक ओर पितृसत्तात्मक समाज की चुनौतियां और दूसरी ओर बाहरी समाज द्वारा आदिवासियों के साथ होने वाले भेदभाव का सामना। वे आदिवासी स्त्रियों को अपनी अस्मिता, आत्मसम्मान, और स्वतंत्रता के प्रति सजग रहने का संदेश देती हैं।
5. **समाज में आदिवासी अस्मिता की स्वीकृति**: निर्मला पुतुल का लेखन आदिवासियों की अस्मिता को समाज में मान्यता दिलाने का प्रयास करता है। वे चाहती हैं कि आदिवासी समुदाय का योगदान और उनकी पहचान का

समाज में उचित सम्मान हो। उनकी कविताओं में यह आकांक्षा झलकती है कि आदिवासी समाज की सांस्कृतिक धरोहर और उसकी अस्मिता को आदिवासी समाज में उचित स्थान मिले।

निर्मला पुतुल के साहित्य में आदिवासी अस्मिता का मतलब न केवल सांस्कृतिक पहचान, बल्कि उनके अस्तित्व, अधिकार, और सम्मान की रक्षा भी है। वे अपनी कविताओं में आदिवासियों को उनकी अस्मिता और अधिकारों के प्रति सजग करती हैं और बाहरी शोषणकारी ताकतों से खुद की रक्षा करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके लेखन ने आदिवासी समाज की पहचान और उनके अधिकारों को साहित्य और समाज में एक नई जगह दी है।

## 2. शोध कार्य का उद्देश्य:-

इस शोध के मुख्य उद्देश्य हैं:

1. निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री चेतना और आदिवासी अस्मिता के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना।
2. आदिवासी स्त्रियों की अस्मिता, उनके संघर्षों, और उनके जीवन पर पितृसत्तात्मक समाज के प्रभाव को समझना।
3. आदिवासी समाज के प्रति बाहरी ताकतों के शोषण और इसके परिणामस्वरूप आदिवासी अस्मिता को हुए खतरे को निर्मला पुतुल की कविताओं में खोज निकालना।
4. निर्मला पुतुल के समकालीन कवियों की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन कर विभिन्न समस्याओं को उजागर करना

## 3. शोध कार्य का महत्व:-

**स्त्री चेतना**का अर्थ है महिलाओं में जागरूकता और आत्म-साक्षात्कार की भावना, जो उनके अधिकारों, अस्मिता, आत्मसम्मान, और स्वतंत्रता के प्रति उन्हें सचेत करती है। यह चेतना महिलाओं को अपनी व्यक्तिगत, सामाजिक, और आर्थिक स्थिति के प्रति जागरूक करती है और उन्हें समाज में समान अधिकारों,सम्मान, और अवसरों के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है।

स्त्री चेतना का उद्भव महिलाओं की उन समस्याओं और संघर्षों से हुआ है, जिनका सामना वे सदियों से करती आई हैं, जैसे पितृसत्तात्मक व्यवस्था का दबाव, लैंगिक भेदभाव, शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता की कमी, और समाज में उनके योगदान को कमतर आंकना। इसके अंतर्गत महिलाओं का अपनी पहचान को मजबूत करना, अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना, और समाज में समान अवसरों के लिए प्रयास करना शामिल है।

यह विचार विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक, और राजनीतिक आंदोलनों में प्रमुखता से उभरा है, जिसमें महिलाओं के आत्मनिर्णय, आत्मसम्मान, और समानता के अधिकारों पर जोर दिया गया। साहित्य और कला में स्त्री चेतना का चित्रण उन कहानियों, कविताओं, नाटकों और लेखों के माध्यम से होता है जो महिलाओं के संघर्ष, उनकी आकांक्षाओं, और समाज में उनके योगदान को उजागर करते हैं।

स्त्री चेतना की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं:

1. **आत्मनिर्भरता** - महिलाओं में आर्थिक, शैक्षिक, और सामाजिक स्तर पर आत्मनिर्भरता की भावना को बढ़ावा।
2. **समानता की मांग** - समाज में पुरुषों के बराबर अधिकारों और अवसरों के लिए संघर्ष।
3. **लैंगिक भेदभाव का विरोध** - महिलाओं के साथ होने वाले किसी भी प्रकार के भेदभाव और अत्याचार का विरोध।

4. **आत्मसम्मान और अस्मिता की खोज** - अपने अधिकारों और अस्मिता के प्रति सजगता।
5. **संस्कृति और परंपराओं की पुनःव्याख्या** - परंपरागत पितृसत्तात्मक मान्यताओं पर सवाल उठाना और उन्हें महिला-हितैषी दृष्टिकोण से पुनःपरिभाषित करना।

स्त्री चेतना का उद्देश्य महिलाओं को न केवल अपने लिए बल्कि संपूर्ण समाज के लिए न्याय और समानता के मार्ग पर प्रेरित करना है। निर्मला पुतुल के कविताओं के माध्यम से और इस शोध कार्य के अंतर्गत इसे मुद्दे को ही उजागर करने की कोशिश की जायगी, जिससे समाज में उनकी गरिमा, सुरक्षा, और उन्नति सुनिश्चित हो सके।

**4.<u>शोध कार्य की प्रासंगिकता:-</u>** निर्मला पुतुल की रचनाओं में स्त्री चेतना का प्रभावी चित्रण मिलता है। एक आदिवासी महिला कवयित्री होने के नाते, उनकी कविताएं न केवल आदिवासी समाज के संघर्षों को उजागर करती हैं, बल्कि आदिवासी महिलाओं के जीवन, उनके संघर्षों, उनकी पीड़ा, और उनके आत्मसम्मान की भी सशक्त अभिव्यक्ति हैं। निर्मला पुतुल की कविताओं में पितृसत्तात्मक समाज और उसमें महिलाओं की स्थिति पर तीखा प्रहार होता है, और वे एक ऐसी स्त्री चेतना को सामने लाती हैं, जो स्वतंत्रता, समानता और आत्मनिर्भरता की आकांक्षाओं से प्रेरित है।

प्रस्तावित शोध विषय प्रासंगिकता के संदर्भ मे निर्मला पुतुल का साहित्य आदिवासी महिलाओं के प्रति समाज में व्याप्त भेदभाव, दमन और शोषण का विरोध करता है जो आज के लिये प्रासंगिक है। इस शोध कार्य मे उपर्युक्त बिंदुओ को उजागर करने का प्रयास किया जायेगा ।

उनके लेखन में स्त्री चेतना मुख्य रूप से निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित होती है:

1. **आदिवासी स्त्री की अस्मिता**: निर्मला पुतुल ने अपनी कविताओं के माध्यम से आदिवासी महिलाओं की अस्मिता और आत्मसम्मान की रक्षा की बात की है। उनकी कविताएं आदिवासी स्त्रियों की पहचान को संरक्षित करने और उन्हें समाज में गरिमा दिलाने की कोशिश करती हैं। प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से आदिवासी स्त्रियों की पहचान को संरक्षित करने का प्रयास किया जाएगा।
2. **सामाजिक व आर्थिक स्वतंत्रता**: पुतुल की कविताओं में आदिवासी महिलाओं की आर्थिक स्थिति और उनके आत्मनिर्भरता की कमी का चित्रण होता है। वे इस बात पर जोर देती हैं कि महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता हासिल करनी चाहिए ताकि वे अपने अधिकारों के लिए स्वतंत्र रूप से खड़ी हो सकें।
3. **पितृसत्ता का विरोध**: उनकी कविताएं पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रति प्रतिरोध की भावना को प्रस्तुत करती हैं। वे इस व्यवस्था के अंतर्गत आदिवासी महिलाओं की समस्याओं, जैसे घरेलू हिंसा, आर्थिक शोषण, और सामाजिक भेदभाव, पर प्रहार करती हैं और इसे बदलने की बात करती हैं।
4. **स्त्री के आत्मबोध और साहस की अभिव्यक्ति**: निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री चेतना का अर्थ सिर्फ पुरुषों के बराबर अधिकार पाने तक सीमित नहीं है, बल्कि अपने अस्तित्व और अस्मिता की खोज भी है। उनकी रचनाओं में महिलाएं अपने संघर्ष और पीड़ा के साथ-साथ अपने आत्मबल और साहस को पहचानती हैं और अपने हक के लिए संघर्ष करने को तैयार रहती हैं।
5. **संस्कृति और परंपरा का पुनरावलोकन**: उनकी कविताएं आदिवासी समाज की सांस्कृतिक परंपराओं का भी विश्लेषण करती हैं और उन परंपराओं पर सवाल उठाती हैं जो महिलाओं के लिए बाधा बन जाती हैं। उनका साहित्य महिलाओं के अधिकारों को सीमित करने वाली रूढ़ियों का विरोध करता है और एक नई सोच को प्रेरित करता है।

निर्मला पुतुल के लिए स्त्री चेतना केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं, बल्कि समाज की बेहतरी के लिए एक आवश्यक चेतना है। उनकी रचनाएं समाज के हाशिए पर खड़ी आदिवासी महिलाओं को यह प्रेरणा देती हैं कि वे अपनी पहचान

को बनाए रखें, अपने अधिकारों के लिए लड़ें, और एक स्वतंत्र एवं समान समाज की स्थापना में योगदान दें।प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से आदिवासी स्त्रियों की पहचान को संरक्षित करने का प्रयास किया जाएगा।

## 5.शोध कार्य का अध्ययन पद्धति या प्रविधि :-

पुस्तको के अनुसार अनुसंधन के कई प्रविधिया हैं जैसे-

1. सर्वेक्षण विधि
2. आलोचनात्मक विधि एवम तुलनातमक विधि
3. लेखो आलेखोन का अध्ययन
4. पुस्तकालय अवलोकन
5. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री

1. सर्वेक्षण विधि: अपने शोध कार्य को पूरा करने में सर्वेक्षण विधि का उपयोग करूँगा।
2. आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक विधि: आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक विधि के अंतर्गत विभिन्न पुस्तको का अध्ययन करूँगा. निर्मला पुतुल जी पर दिए गये कई आलोचनात्मक मतों और विचारों को प्राविधि के रूप में प्रयोग करूँगा उसे ही अपने अनुसन्धान कार्य में उदहारण स्वरुप प्रस्तुत करूँगा।
3. लेखों-आलेखों का अध्ययन निर्मला पुतुल के कई लेख शोध आलेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में है, जिन्हें मैं अपने शोध कार्य में चर्चा करूँगा।
4. पुस्तकालय अवलोकन : इस विधि के अंतर्गत रांची एवं झारखण्ड के विभिन्न पुस्तकालयों में जाकर निर्मला पुतुल के साहित्य की जानकारी प्राप्त करूँगा।
5. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री विधि: इस विधि के अंतर्गत कई पुस्तकों मवन इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री की जानकारी एवं खोज करने का प्रयास करूँगा।

**6.साहित्य अवलोकन:**साहित्य अवलोकन समाज के समस्त व्यवहार जैसे सामाजिक मनोवैज्ञानिक, आद्यात्मिक, ऐतिहासिक इत्यादि साहित्य उपलब्ध है. साहित्य अवलोकन वह साधन है. जिससे समाज के समस्त व्यवहार की भूमिका कला संस्कृति के रूप में डायरी संस्मरण पत्र कहानियां निबंध जैसी गैर काल्पनिक शैलियों में शामिल हो सकते हैं।
यह शोध आदिवासी साहित्य की प्रमुख कवयित्री निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री चेतना और आदिवासी अस्मिता की गहरी समझ और अभिव्यक्ति का अध्ययन करने का प्रयास करता है। निर्मला पुतुल अपनी कविताओं के माध्यम से आदिवासी समाज, विशेषकर आदिवासी स्त्री के संघर्ष, अस्मिता, और समाज में उसकी स्थिति को प्रमुखता से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविताओं में न केवल एक स्त्री की स्वतंत्रता और समानता की भावना है, बल्कि आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने की अपील भी दिखाई देती है।

**7.शोध कार्य की उपादेयता:**निर्मला पुतुल का जन्म और परवरिश झारखंड के आदिवासी समाज में हुई, जिसने उन्हें आदिवासी समाज के दर्द, उनकी संस्कृति, और उनकी कठिनाइयों को निकटता से देखने का अवसर दिया। उनके लेखन में आदिवासी समाज के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का विश्लेषण मिलता है, जो मुख्यधारा की साहित्यिक परंपरा में दुर्लभ है। उनके साहित्य में स्त्री चेतना और आदिवासी अस्मिता के प्रति जागरूकता गहराई से झलकती है, और उनकी कविताएं आदिवासी समाज के अधिकारों, उनकी पहचान, और उनके संघर्षों का प्रमाण हैं।

**8.तथ्य संकलन**: तथ्य संकलन के अंतर्गत इस शोध में निर्मला पुतुल की कविताओं के निम्नलिखित पहलुओं पर विशेष ध्यान देने का प्रयास किया जायेगा:-

1. **स्त्री चेतना और आत्मनिर्भरता:**
   उनकी कविताएं महिलाओं में आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की भावना को प्रेरित करती हैं। आदिवासी स्त्रियों को अपने अधिकारों के प्रति सजग और अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक होने की बात वे मुखरता से कहती हैं।
2. **पितृसत्तात्मक समाज का विरोध:**
   उनकी रचनाएं पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध की आवाज हैं। वे आदिवासी स्त्रियों के साथ होने वाले शोषण, हिंसा, और भेदभाव को कठोरता से नकारती हैं और उनके स्वतंत्र अस्तित्व का समर्थन करती हैं।
3. **आदिवासी अस्मिता का संरक्षण:**
   पुतुल की कविताएं आदिवासी अस्मिता को बाहरी प्रभावों से सुरक्षित रखने की अपील करती हैं। आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपराएं, और उनके भूमि एवं प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार आदिवासी अस्मिता का अभिन्न हिस्सा हैं, जिनकी रक्षा के लिए वे कविता के माध्यम से मुखर होती हैं।
4. **संघर्ष और प्रतिरोध की भावना:**
   आदिवासी समाज के संघर्षों का चित्रण करते हुए निर्मला पुतुल की कविताओं में प्रतिरोध की भावना दिखाई देती है। वे आदिवासियों को उनकी अस्मिता, संस्कृति और अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा देती हैं।
5. **आदिवासी स्त्रियों की दुहरी लड़ाई:**
   उनकी कविताएं आदिवासी स्त्रियों की दुहरी लड़ाई—एक ओर पितृसत्ता के खिलाफ और दूसरी ओर बाहरी समाज के शोषण के खिलाफ—को स्पष्ट करती हैं। वे अपने लेखन के माध्यम से आदिवासी स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा का समर्थन करती हैं और उनके अस्तित्व के लिए एक सशक्त आधार तैयार करती हैं।

**निष्कर्ष:**निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री चेतना और आदिवासी अस्मिता के प्रति जागरूकता का संदेश है, जो आदिवासी महिलाओं के संघर्ष, उनकी पहचान, और समाज में उनके अधिकारों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करता है। उनका साहित्य आदिवासी महिलाओं को अपनी संस्कृति और अस्मिता को बनाए रखने और पितृसत्ता एवं बाहरी समाज के शोषण के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित करता है।प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से आदिवासी स्त्रियों की पहचान को और उसकी अस्मिता को सुरक्षित संरक्षित करने का प्रयास होगा।

## "स्त्री चेतना और आदिवासी अस्मिता के आलोक में निर्मला पुतुल की कविताएँ: एक मूल्यांकन"

**प्रस्तावित शोध के अध्याय विभाजन:**

1 प्रथम अध्याय:-निर्मला पुतुल का व्यतित्व एवं कृतित्व।

क) जन्म,
ख) शिक्षा-दीक्षा,
ग) पारिवारिक जीवन,
घ) सामाजिक परिवेश।
ङ) निर्मला पुतुल की आत्मकेंद्रित रचनाएँ।
च) निर्मला पुतुल की स्त्री केन्द्रित रचनाएँ।
छ) निर्मला पुतुल की प्रकृति केन्द्रित रचनाएँ।
ज) निर्मला पुतुल की प्रेम केन्द्रित रचनाएँ।

2. द्वितीय अध्याय:- स्त्री चेतना का विश्लेषण और अदिवासी कविता का उद्भव-विकास।

क) स्त्री चेतना से तात्पर्य
ख) स्त्री चेतना का स्वरूप।
ग) आदिवसी कविता का उद्भव और विकास
घ) आदिवासी कविता के स्वरुप।
ङ) आदिवासी कविता में संस्कृति और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।

3 तृतीय अध्याय:-आदिवासीअस्मिता और आदिवासी विमर्श के आलोक में निर्मला पुतुल की कविताएँ।

क) आदिवासी अस्मिता से तात्पर्य।
ख) आदिवासी संस्कृति और आदिवासी परंपराओं का सम्मान।
ग) आदिवासी विमर्श: अर्थ एवं अवधारणा।
घ) प्राकृतिक संसाधनों और भूमि का अधिकार के संरक्षण में आदिवासी स्त्री।
ङ) आदिवासी समाज का संघर्ष और शोषण का प्रतिरोध।
च) आदिवासी अस्मिता के बचाव में स्त्री का संघर्ष।
छ) समाज में आदिवासी अस्मिता की स्वीकृति।

4. चतुर्थ अध्याय:- निर्मला पुतुल की कविताओं का विभिन्न पहलुओं से मूल्यांकन:-

क) निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री चेतना का विश्लेषण।
ख) निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री चेतना और आत्मनिर्भरता।
ग) निर्मला पुतुल की कविताओं में पितृसत्तात्मक समाज का विरोध।
घ) निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी अस्मिता का संरक्षण।
ङ) पुतुल की कविताओं में संघर्ष और प्रतिरोध की भावना।
च) निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्रियों की दुहरी लड़ाई।

5.पंचम अध्याय:- समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में आदिवासी विमर्श।

क) समकालीन कवियों की कविताओं में सामाजिक जीवन।
ख) समकालीन कवियों की कविताओं में राजनैतिक परिवेश।
ग) समकालीन कवियों की कविताओं मेंलोक संस्कृति, लोक परम्परा और जीवन पद्धति।
घ) समकालीन कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त आर्थिक स्थिति।
ङ) निर्मला पुतुल की कविताओं में प्रकृति, प्रेम, संवेदना, पितृसत्ता औरप्रतिरोध की अभिव्यक्ति।
च) कविताओं में पितृसत्ता का विरोध और आदिवासी अस्मिता की सुरक्षा।

6. *निष्कर्ष:*अध्ययन के निष्कर्ष और भविष्य के लिए संभावनाएं।

यह शोध समाज में आदिवासी स्त्रियों की अस्मिता और उनके संघर्ष को मुख्यधारा में स्थान दिलाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध होगा।

## शोध ग्रन्थ सूची

**1. स्त्री चेतना पर आधारित पुस्तकें**

- *"स्त्री-शक्ति: नारी सशक्तिकरण की दिशा में"* – कमला भसीन
- *"घास की रोटी"* – मृदुला गर्ग
- *"नारीवाद की यात्रा"* – सुषमा अस्थाना
- *"स्त्री: विमर्श और दृष्टि"* – निर्मला जैन
- *"स्त्री सशक्तिकरण: समाज और साहित्य में"* – मीना अरक्कल

**2. आदिवासी अस्मिता और आदिवासी साहित्य पर आधारित पुस्तकें**

- *"आदिवासी अस्मिता और संघर्ष"* – महाश्वेता देवी
- *"आदिवासी जीवन और संघर्ष"* – रामदयाल मुण्डा
- *"आदिवासी चेतना और साहित्य"* – ज्योत्सना मिलिंद
- *"भारत के आदिवासी समाज का इतिहास और संस्कृति"* – वी. विद्रोही
- *"आदिवासी साहित्य के स्वर"* – विजय जाधव

**3. निर्मला पुतुल के साहित्य पर केंद्रित पुस्तकें**

- *"नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द"* – निर्मला पुतुल (कविता संग्रह)
- *"इस तिरिया जनम को"* – निर्मला पुतुल (कविता संग्रह)
- *"आदिवासी कविता और निर्मला पुतुल का योगदान"* – मीना तिवारी (समीक्षात्मक ग्रंथ)

**4. आदिवासी विमर्श और स्त्री-विमर्श को जोड़ने वाली पुस्तकें**

- *"दलित और आदिवासी स्त्री विमर्श"* – गीता शांडिल्य
- *"आदिवासी साहित्य और समाज"* – संतोष कुमारी
- *"आदिवासी स्त्री: पहचान और संघर्ष"* – रजनी तिवारी

**शोधार्थी**

**प्रो प्रवीन कुमार दास,**
**सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,**
**हिंदी विभाग,के0 सी0 बी0 महाविद्यालय, बेड़ो।**

**शोध निर्देशक**

**डॉ मीरा कुमारी,**
**सहायक प्राध्यापक,**
**के0 सी0 बी0 महाविद्यालय, बेड़ो।**